

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 16: पवित्र पयोव्रत

14 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



स्वर्ग से वंचित और अपने निर्वासित पुत्रों के लिए शोकाकुल, देवताओं की माता अदिति को ऋषि कश्यप से शुद्ध भक्ति का एक पवित्र व्रत मिलता है — पयोव्रत — जिससे स्वयं परमेश्वर निकट आ सकते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्जम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। आठवें स्कन्ध का यह षोडश अध्याय स्वर्ग के पतन से एक शोकाकुल माता के हृदय की ओर मुड़ता है, और उस पवित्र भक्ति-व्रत की ओर जो उनके पति कश्यप उन्हें उत्तर में सिखाते हैं।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 16 (षोडश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: अदिति और पवित्र पयोव्रत
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — कश्यप तथा अदिति के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: ऋषि कश्यप का आश्रम
- केन्द्रीय विषय: देवताओं के निर्वासन पर अदिति का शोक; भगवान् वासुदेव की उपासना का कश्यप का परामर्श; पयोव्रत की शिक्षा और उसके फल का वचन
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 16, श्लोक 1–62
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

पञ्चदश अध्याय में बली, अपने गुरु भृगुओं द्वारा पुनर्जीवित और सामर्थ्यवान् होकर, स्वर्ग पर चढ़ाई करते हैं; बृहस्पति के परामर्श पर देवता हट जाते हैं, और बली तीनों लोकों को जीत लेते हैं। यह अध्याय उन निर्वासित देवताओं की व्यथा को उनकी माता अदिति के शोक और उनके पति द्वारा दिए गए पवित्र उपाय के माध्यम से उठाता है।

अदिति का शोक

जब उनके पुत्र तीनों लोकों से लुप्त हो गए और असुरों ने उनके सिंहासन हथिया लिए, तब देवताओं की माता अपने शोक में अकेली रह गई, मानो कोई भी उनकी रक्षा करने वाला न हो।

श्रीशुक उवाच

एवं पुत्रेषु नष्टेषु देवमातादितिस्तदा ।

हृते त्रिविष्टपे दैत्यैः पर्यतप्यदनाथवत् ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच एवं पुत्रेषु नष्टेषु देवमातादितिस्तदा हृते त्रिविष्टपे दैत्यैः पर्यतप्यदनाथवत्

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — जब उनके पुत्र इस प्रकार लुप्त हो गए और स्वर्ग असुरों द्वारा छीन लिया गया, तब देवताओं की माता अदिति ऐसे शोक करने लगीं मानो पूर्णतः रक्षकहीन हों। (स्कन्ध 8, अध्याय 16, श्लोक 1)

इस शोक में उनके पति आए। गहन ध्यान में लम्बे प्रवास के पश्चात ऋषि कश्यप उनके आश्रम लौटे और उसे उदास और आनन्दरहित पाया।

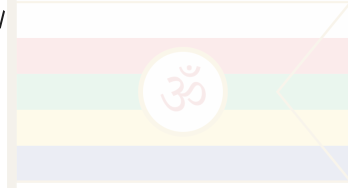


अपने पुत्रों के निर्वासित और स्वर्ग के असुरों द्वारा छीने जाने पर अदिति एक असहाय स्त्री के समान शोक करती है, तब तक जब उसके पति ऋषि कश्यप ध्यान से लौटकर उसके आश्रम को आनन्दरहित पाते हैं (श्लोक 1-2)।

अपने पुत्रों के निर्वासित होने और स्वर्ग के असुरों द्वारा छीने जाने पर अदिति एक असहाय स्त्री-सी शोक करती हैं, जब तक उनके पति ऋषि कश्यप ध्यान से लौटकर उनके आश्रम को आनन्दरहित नहीं पाते (श्लोक 1-2)।

कश्यप की पूछताछ और अदिति का विलाप

अपनी पत्नी द्वारा सादर स्वीकार किए जाकर कश्यप ने पवित्र अग्नियों, ब्राह्मणों, अतिथियों और गृह-कर्तव्यों की कुशलता पूछी, कोमलता से भाँपते हुए कि उनका मन अशान्त है। अदिति ने आश्चर्य किया कि ब्राह्मणों और पवित्र अनुष्ठानों की सब कुशलता है, किन्तु फिर अपना हृदय खोल दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि प्रत्येक जीव स्नेह के बन्धनों से बँधा है — और अपनी व्यथा कही: उनका ऐश्वर्य, वैभव, यश और स्वयं का घर बलशाली असुरों द्वारा हड़प लिया गया, और वे, शत्रुओं द्वारा निर्वासित, दुःख के सागर में डूबी हैं। उन्होंने बुद्धिमान ऋषि से प्रार्थना की कि वे अपनी सुविचारित बुद्धि से देवताओं के खोए हुए को पुनः पाने का कोई उपाय खोजें।





अदिति कश्यप के समक्ष अपना हृदय खोलती है, और विलाप करती है कि देवताओं का सौभाग्य, वैभव और धाम असुरों ने हड़प लिया है, और उनसे इन्हें पुनः प्राप्त करने का उपाय पूछती है (श्लोक 11-17)।

अदिति कश्यप के समक्ष अपना हृदय खोलती हैं, यह विलाप करते हुए कि देवताओं का ऐश्वर्य, यश और घर असुरों द्वारा हड़प लिया गया है, और उन्हें पुनः पाने का उपाय खोजने की प्रार्थना करती हैं (श्लोक 11-17)।

कश्यप वासुदेव की उपासना का परामर्श देते हैं

कश्यप की पहली प्रतिक्रिया कोई योजना नहीं, अपितु एक कोमल, ज्ञानपूर्ण मुस्कान है।

श्रीशुक उवाच

एवमभ्यर्थितोऽदित्या कस्तामाह स्मयन्निव ।

अहो मायाबलं विष्णोः स्नेहबद्धमिदं जगत् ॥ १८ ॥

श्रीशुक उवाच एवमभ्यर्थितोऽदित्या कस्तामाह स्मयन्निव अहो मायाबलं विष्णोः स्नेहबद्धमिदं जगत्

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — अदिति द्वारा इस प्रकार प्रार्थना किए जाने पर कश्यप कुछ मुस्कराते हुए बोले: “आश्चर्य है, भगवान विष्णु की माया कितनी प्रबल है, जिससे यह सम्पूर्ण जगत सन्तानों के स्नेह से बँधा है!” (स्कन्ध 8, अध्याय 16, श्लोक 18)

तत्पश्चात् वे उन्हें हर ऐसे बन्धन के मूल में छिपे गहरे सत्य का स्मरण कराते हैं।

क्व देहो भौतिकोऽनात्मा क्व चात्मा प्रकृतेः परः ।

कस्य के पतिपुत्राद्या मोह एव हि कारणम् ॥ १९ ॥

क्व देहो भौतिकोऽनात्मा क्व चात्मा प्रकृतेः परः कस्य के पतिपुत्राद्या मोह एव हि कारणम्

अर्थ: यह नश्वर भौतिक शरीर कहाँ, और प्रकृति से परे शाश्वत आत्मा कहाँ? मोह के कारण ही हम किसी को अपना पति, पत्नी अथवा पुत्र कहते हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 16, श्लोक 19)

यही कश्यप का अदिति को दिया गया सच्चा उपहार है, किसी भी व्यावहारिक उपाय से पूर्व। उनका शोक वास्तविक है, और वे उसे नकारते नहीं — किन्तु उसकी गहरी जड़, वे उन्हें दिखाते हैं, स्वर्ग की हानि में नहीं, अपितु नश्वर शरीर को, और उस पर बने पति, पत्नी तथा पुत्र के बन्धनों को, शाश्वत आत्मा समझ लेने के भ्रम में है। वही मोह जो एक माता को अपनी सन्तानों के भाग्य से पूर्णतः तादात्म्य करा देता है, अदिति को दुःख के सागर में डुबो चुका है। वे अदिति से कम अनुभव करने को नहीं कहते; वे उन्हें अधिक स्पष्ट देखने को कहते हैं, ताकि अपने निर्वासित पुत्रों की चाह उस एक बन्धन की चाह में उठ सके जो कभी समाप्त नहीं होता — वासुदेव के साथ आत्मा का सम्बन्ध। ऐसा ज्ञान जिसमें स्वयं स्थित पति ही अपनी शोकाकुल पत्नी को इतनी कोमलता से परामर्श दे सकता है, उसके शोक को निराशा में कठोर होने से बचाते हुए।

तभी कश्यप व्यावहारिक उपाय की ओर मुड़ते हैं। युद्ध या सन्धि की कोई युक्ति सुझाने के बजाय, वे उन्हें सच्चे और स्थायी उपाय रूप में परमेश्वर की ओर संकेत करते हैं।

उपतिष्ठस्व पुरुषं भगवन्तं जनार्दनम् ।

सर्वभूतगुहावासं वासुदेवं जगद्गुरुम् ॥ २० ॥

उपतिष्ठस्व पुरुषं भगवन्तं जनार्दनम् सर्वभूतगुहावासं वासुदेवं जगद्गुरुम्

अर्थ: उस परम पुरुष, भगवान् जनार्दन की उपासना करो — वासुदेव, जो समस्त प्राणियों के हृदय में निवास करते हैं और विश्व के गुरु हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 16, श्लोक 20)

वही भगवान्, कश्यप उन्हें आश्वस्त करते हैं, भक्ति से शीघ्र प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों के प्रति स्नेही हैं; उन्हें अर्पित उपासना कभी निष्फल नहीं जाती। जब अदिति पूछती हैं कि वे किस विधि से विश्व के नियन्ता की आराधना करें ताकि वे उनकी हार्दिक कामना पूर्ण करें, तब कश्यप उन्हें एक पवित्र व्रत बताने को उद्यत होते हैं।

पयोव्रत

कश्यप उन्हें पयोव्रत नामक व्रत सिखाते हैं, जो भगवान् केशव की आराधना के लिए किया जाता है। परम भक्ति से भरकर और केवल दुःख पर निर्वाह करते हुए, उपासक को फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में बारह दिन कमलनयन भगवान् विष्णु की अर्चना करनी चाहिए।

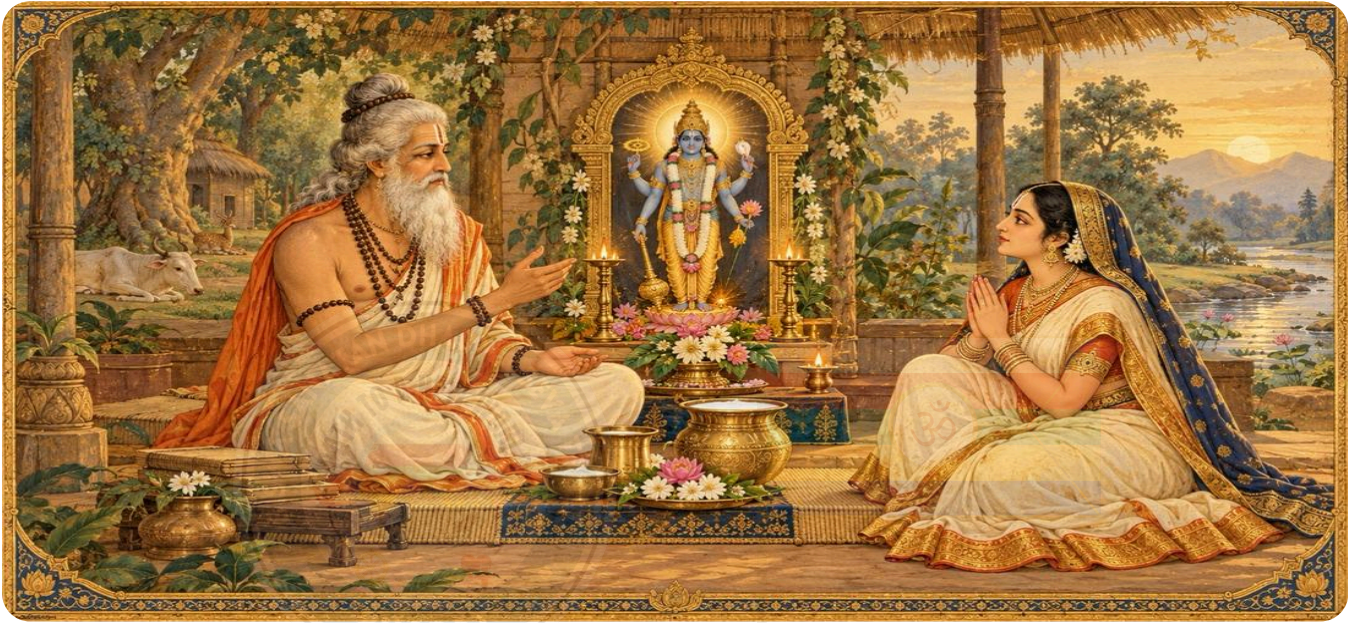
फाल्गुनस्यामले पक्षे द्वादशाहं पयोव्रतम् ।

अर्चयेदरविन्दाक्षं भक्त्या परमयान्वितः ॥ २५ ॥

फाल्गुनस्यामले पक्षे द्वादशाहं पयोव्रतम् अर्चयेदरविन्दाक्षं भक्त्या परमयान्वितः

अर्थ: फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में, बारह दिन तक पयोव्रत का पालन करते हुए, परम भक्ति से कमलनयन भगवान् की अर्चना करनी चाहिए। (स्कन्ध 8, अध्याय 16, श्लोक 25)

वे इस अनुष्ठान का प्रेमपूर्ण विस्तार से वर्णन करते हैं: स्नान, चन्दन और पुष्पों से भगवान की प्रतिमा की पूजा, पवित्र मन्त्रों और हार्दिक स्तुतियों से उनका आवाहन, भोग अर्पित कर उसका वितरण, भगवान के मन्त्र का जप, और दूध में पकाए चावल से ब्राह्मणों को भोजन कराना। बारह दिन भर भक्त को कठोर ब्रह्मचर्य पालना है, भूमि पर सोना है, दिन में तीन बार स्नान करना है, समस्त प्राणियों के प्रति अहिंसक रहना है, अपवित्र वार्ता और प्रत्येक विलास से बचना है, और समस्त कृपणता से रहित होकर दान देना है, यहाँ तक कि दीन, अन्धे और दुखी का भी सत्कार करना है। त्रयोदशी के दिन प्रतिमा को पुनः पाँच पवित्र पदार्थों से स्नान कराकर और अधिक भव्यता से पूजा जाता है तथा पुरुष-सूक्त का पाठ किया जाता है; अनुष्ठान का मार्गदर्शन करने वाले गुरु और पुरोहितों को वस्त्र, आभूषण तथा गौओं से सम्मानित किया जाता है, और तत्पश्चात् पवित्र भोग बिना किसी भेदभाव के — निम्नतम व्यक्ति तक को भी — बाँटा जाता है, क्योंकि भगवान प्रत्येक हृदय में समान रूप से विराजमान हैं (श्लोक 50-56)। यह पूर्णतः भक्ति, संयम और उदारता से बुना व्रत है।



ऋषि कश्यप अदिति को पवित्र पयोव्रत सिखाते हैं — बारह दिनों का दुग्ध-आहार, मन्त्रों और प्रार्थनाओं से भगवान विष्णु की उपासना, आत्म-संयम, और समस्त प्राणियों को उदार दान (श्लोक 22-57)।

ऋषि कश्यप अदिति को पवित्र पयोव्रत सिखाते हैं — बारह दिन का दुग्ध-आहार, मन्त्रों और स्तुतियों से भगवान विष्णु की उपासना, संयम, और सबके प्रति उदार दान (श्लोक 22-57)।

व्रत का फल

कश्यप अपने दिए व्रत की महिमा से समापन करते हैं। पयोव्रत, वे कहते हैं, एक सार्वभौम यज्ञ है जो समस्त यज्ञों का फल देता है, समस्त तपों का सार, और भगवान को अत्यन्त प्रिय। वस्तुतः वही सच्चा व्रत, दान, तप अथवा यज्ञ है जिससे भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। और इस प्रकार वे अदिति को अपना स्नेहपूर्ण आश्वासन देते हैं।

तस्मादेतद्व्रतं भद्रे प्रयता श्रद्धयाचर ।

भगवान्परितुष्टस्ते वरानाशु विधास्यति ॥ ६२ ॥

तस्मादेतद्ब्रतं भद्रे प्रयता श्रद्धयाचर भगवान्परितुष्टस्ते वरानाशु विधास्यति

अर्थ: अतः हे भद्रे, संयम और श्रद्धा से इस व्रत का पालन करो; तुमसे भली-भाँति प्रसन्न होकर भगवान शीघ्र ही तुम्हारी समस्त अभीष्ट वस्तुएँ प्रदान करेंगे। (स्कन्ध 8, अध्याय 16, श्लोक 62)

इन शब्दों से आगे का मार्ग खुल जाता है — देवताओं के बल से नहीं, अपितु एक माता की भक्ति से। अगला अध्याय दिखाएगा कि अदिति इस व्रत का कितनी निष्ठा से पालन करती हैं, और किस प्रकार स्वयं भगवान उत्तर देते हैं।



आश्चस्त कि भगवान उसकी कामना पूर्ण करेंगे, अदिति श्रद्धा और भक्ति से पयोव्रत का पालन करने का निश्चय करती है — यह मार्ग देवताओं के बल से नहीं, अपितु एक माता की सच्ची उपासना से खुला (श्लोक 58-62)।

यह आश्वासन पाकर कि भगवान उनकी कामना पूर्ण करेंगे, अदिति श्रद्धा और भक्ति से पयोव्रत का पालन करने का संकल्प लेती हैं, वह माग जो देवताओं के बल से नहीं, अपितु एक माता की निष्ठापूर्ण उपासना से खुला (श्लोक 58-62)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. संकट में सबसे पहले भगवान की ओर मुड़ें। कश्यप अदिति को सेनाओं या मित्रों से सहायता माँगने का नहीं, अपितु परमेश्वर की उपासना का परामर्श देते हैं। विपत्ति में हमारी पहली शरण स्वयं भगवान होने चाहिए (श्लोक 20)।
2. शोक प्रायः स्वयं को भूल जाने से उत्पन्न होता है। कोई भी व्यावहारिक उपाय देने से पूर्व, कश्यप अदिति को स्मरण कराते हैं कि शरीर और उस पर आधारित सम्बन्ध — पति, पत्नी, पुत्र — नश्वर हैं, और हम किसी को “अपना” केवल शरीर से तादात्म्य के मोह के कारण ही कहते हैं। सच्ची सान्त्वना इसी दृष्टि से आरम्भ होती है (श्लोक 19)।
3. भगवान की भक्ति कभी निष्फल नहीं जाती। कश्यप अदिति को आश्चस्त करते हैं कि वासुदेव की उपासना उन्हें शीघ्र प्रसन्न करती है और सदा फलदायी होती है। निष्ठापूर्ण भक्ति कभी व्यर्थ प्रयास नहीं (श्लोक 20-21)।

4. सच्ची उपासना भक्ति, संयम और दान को जोड़ती है। पयोव्रत भगवान की आराधना, जीवन की पवित्रता और अनुशासन, तथा सबके प्रति उदारता — यहाँ तक कि दीन के प्रति भी — को एक साथ बुनता है। सच्ची भक्ति हमारे जीवन और दूसरों के प्रति व्यवहार में छलक पड़ती है (श्लोक 48-56)।

5. सबसे बड़ा यज्ञ वही है जो भगवान को प्रसन्न करे। कश्यप पयोव्रत को समस्त तपों का सार कहते हैं, क्योंकि वही सच्ची उपासना है जिससे विष्णु प्रसन्न होते हैं। बाहरी विस्तार नहीं, अपितु उसके पीछे का प्रेमपूर्ण हृदय महत्त्वपूर्ण है (श्लोक 60-61)।

6. भगवान निष्ठापूर्ण, विनम्र भक्ति का उत्तर देते हैं। देवताओं की महान हानि का उपाय शक्ति नहीं, अपितु एक भक्त माता का विनम्र व्रत है। भगवान प्रेम से निकट खींचे जाते हैं, बल से विवश नहीं होते (श्लोक 62)।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय के आकार में कुछ गहराई से हृदयस्पर्शी है। देवताओं ने सब कुछ खो दिया है — अपना स्वर्ग, अपना वैभव, अपना घर — और हम अपेक्षा कर सकते हैं कि उपाय हानि के मान से मेल खाए: एक बलशाली सेना, एक चतुर युक्ति, एक अधिक शक्तिशाली शस्त्र। इसके बजाय, उनकी शोकाकुल माता को दिया गया उत्तर आश्चर्यजनक रूप से कोमल है। केवल दूध पिओ। प्रातः उठकर स्नान करो। पुष्पों और प्रेमपूर्ण हृदय से भगवान की उपासना करो। भूखों को भोजन कराओ, किसी को हानि न पहुँचाओ, कठोर वचन न कहो, दीनतम को भी उदारता से दो। दूसरे शब्दों में, सबसे बड़े ऐश्वर्य को पुनः पाने का मार्ग सबसे छोटे और विनम्रतम दैनिक अनुशासनों से होकर जाता है, जो निष्ठापूर्ण प्रेम से अर्पित हों। यही भागवत की शान्त बुद्धि है: कि भगवान का द्वार बल के लिए नहीं, अपितु भक्ति के लिए खुलता है, और सबसे साधारण कर्म — एक सरल आहार, एक दैनिक पूजा, एक अजनबी के प्रति दया — श्रद्धा से अर्पित होने पर वही साधन बन जाते हैं जिनसे स्वयं स्वर्ग पुनः प्राप्त होता है। अदिति का उपाय हमारा भी उपाय है। हमने जो भी खोया हो, वापसी का मार्ग पकड़ने से नहीं, अपितु भगवान की ओर हृदय के विनम्र, प्रेमपूर्ण मुड़ाव से आरम्भ होता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज एक छोटा, विनम्र अनुशासन लें और उसे भगवान को अर्पित करें जैसे अदिति को अपना व्रत अर्पित करना सिखाया गया — कृतज्ञता से खाया एक सरल भोजन, कुछ मिनट की शान्त उपासना, किसी जरूरतमन्द के प्रति एक दयालु कर्म। ऐसा करते हुए कोमलता से दोहराएँ “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” यह स्मरण करते हुए कि भगवान भव्य आयोजनों से नहीं, अपितु निष्ठापूर्ण, प्रेमपूर्ण भक्ति से निकट खींचे जाते हैं। सबसे छोटा कर्म भी, श्रद्धा से किया जाए तो, उस मार्ग का एक चरण बन जाए जो खोए हुए को पुनः स्थापित करता है।

उपसंहार

आठवें स्कन्ध का षोडश अध्याय किसी युद्ध-योजना से नहीं, अपितु एक पति की कोमलता से समाप्त होता है। कोई भी व्यावहारिक उपाय देने से पूर्व कश्यप पहले अपनी शोकाकुल पत्नी को शरीर को आत्मा समझ लेने के गहरे शोक से मुक्त करते हैं, और तभी उन्हें पयोव्रत सिखाते हैं — बारह दिन का दुग्ध-आहार, संयम और मुक्तहस्त दान — उस एकमात्र शरण के निकट पहुँचने का निश्चित साधन जो कभी विफल नहीं होती। वे इसे समस्त यज्ञों में श्रेष्ठ बताते हैं और आश्चर्य करते हैं कि भगवान, प्रसन्न होकर, शीघ्र ही प्रत्येक उचित कामना पूर्ण करेंगे। अगले अध्याय में अदिति पूर्ण श्रद्धा से यह व्रत पालन करती हैं, और स्वयं परमेश्वर उनके द्वार पर पधारते हैं।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, षोडश अध्याय, पृष्ठ 800–806।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेख के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-16-aditi-and-the-sacred-payovrata-vow-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट